13. जनसंख्या नियन्त्रण
(Population Control)

आज देश के समक्ष एक गम्भीर समस्या जनसंख्या की तेज वृद्धि दर है। विश्व की जनसंख्या की तुलना में चीन के बाद भारत का स्थान आता है यानि कि भारत का जनसंख्या के सन्दर्भ में विश्व में दूसरा स्थान है। हमारे देश में प्रत्येक 1.2 क्षण में एक शिशु का जन्म, प्रत्येक मिनट में 50 शिशु, प्रति घण्टा 3 हजार शिशु, प्रतिदिन 72 हजार बच्चे, प्रत्येक वर्ष 1 करोड़ 70 लाख की वृद्धि यानि प्रतिवर्ष दो दिल्ली तैयार हो जाती है। जनगणना के अनुसार 1901 में भारत की जनसंख्या केवल 238.4 मिलियन थी जो 2001 में बढ़कर 1027 मिलियन हो चुकी है। यदि देश की जनसंख्या में हो रही उत्तरोत्तर वृद्धि को 1901 की जनसंख्या से तुलना करें तो हम पायेंगे कि 1911 में यह वृद्धि केवल 5.75 प्रतिशत थी जो बढ़ते–बढ़ते अब 330.8 प्रतिशत हो गई है (तालिका 10.1)। किन्तु बेहतर चिकित्सा सुविधाओं और बढ़ते जीवन स्तर के कारण मृत्यु दर में गिरावट आई है (तालिका 10.2)। इस प्रकार हमारे देश में लम्बे समय से जनसंख्या में तो लगातार वृद्धि हो रही है परन्तु मृत्यु दर में गिरावट, फलस्वरूप उत्पन्न स्थिति ही **जनसंख्या विस्फोट** है।

तालिका 13.1 : भारत की जनसंख्या

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या (मिलियन में)	1901 की तुलना में वृद्धि (%)
1901	238.4	–
1911	252.1	5.75
1921	251.3	5.42
1931	279.0	17.02
1941	318.7	33.67
1951	361.1	54.47
1961	439.2	84.25
1971	548.2	129.44
1981	683.3	186.64
1991	846.3	255.0
2001	1027.0	330.8

तालिका 13.2 : भारत में मृत्यु दर

दशक	शिशु मृत्यु दर (प्रति एक हजार जीवित शिशु जन्म)	कुल मृत्यु दर (प्रति दस हजार व्यक्ति)
1951	146	25.1
1981	110	12.5
1991	80	9.8
2000	68	8.5

I जनसंख्या विस्फोट से उत्पन्न समस्याएँ

विश्व की करीब 16 प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है जबकि विश्व का केवल 2.4 प्रतिशत भूमि क्षेत्र ही भारत के पास है। आबादी की तुलना में स्थान कम है जो संसाधनों की उपलब्धता पर दबाव डालता है और फलस्वरूप कई समस्याएँ पैदा हो गई हैं।

1. **भुखमरी** : भोजन हमारी मूलभूत आवश्यकता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि योग्य भूमि निरन्तर आवासीय भूमि में बदलती जा रही है। फलस्वरूप एक ओर तो खाद्यान्न के पैदावार में कमी होना स्वाभाविक है, तो दूसरी ओर जनसंख्या की भोजन सम्बन्धी आवश्यकताएँ निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। कहने की तात्पर्य यह है कि भोज्य पदार्थों का उत्पादन जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नहीं हो पायेगा। आज भी हमारे देश की जनसंख्या के 24 प्रतिशत भाग को दो समय का भोजन भी मुश्किल से मिल पाता है। भोजन की कमी का प्रभाव बच्चों के शारीरिक व मानसिक विकास तथा वयस्कों की कार्यक्षमता पर पड़ता है जो हमारे देश के भावी विकास को अवरूद्ध करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि जनसंख्या वृद्धि दर पर नियन्त्रण किया जाये।

2. **स्वच्छता का अभाव** : अधिक जनसंख्या गन्दगी को जन्म देती है। इस समस्या से मुक्ति पाने के लिये अधिक धन, श्रम व समय की व्यवस्था करनी होती है। यदि यह व्यवस्थाएं समय रहते नियमित रूप से न की जाए तो विभिन्न बीमारियाँ जैसे उल्टी दस्त, बुखार, हैजा, मलेरिया आदि फैल जाती हैं। कई बार ये बीमारियाँ महामारी का रूप भी ले लेती हैं और कई लोगों की मृत्यु का कारण बन जाती हैं।

3. **स्वच्छ पीने योग्य पानी की कमी** : बड़े शहरों से लेकर छोटे गांवों तक में जल की कमी देखी जा सकती है। इस कमी का एक कारण जनसंख्या वृद्धि है क्योंकि जितने अधिक लोग होंगे, पानी उतना ही अधिक खर्च होगा। आपने पढ़ा व सुना होगा कि बढ़ती जनसंख्या की आवास ईंधन व

उद्योगों की आवश्यकता पूर्ति हेतु वनों की कटाई दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। परिणाम स्वरूप बारिश अनियमित रूप से हो रही है और साल दर साल भू–जलस्तर गिरता जा रहा है। देश के कई राज्यों में बाढ़ की स्थिति है तो दूसरे राज्यों में अकाल की स्थिति पिछले कई सालों से निरन्तर बनी हुई है। इसके अतिरिक्त जल की कमी बीमारियों को भी आमन्त्रित करती है।

4. **आवास की कमी** : जल की कमी के साथ–साथ प्रति व्यक्ति भूमि की उपलब्धता में कमी होती जा रही है। भूमि की कमी के कारण अब पहाड़ों, जंगलों और झीलों पर भी अतिक्रमण दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जगह–जगह झुग्गी झोपड़ियाँ कुकरमुत्ते की तरह बढ़ती जा रही हैं। जहाँ पर रहने, पानी, सफाई आदि की व्यवस्था नहीं के बराबर होती है जो कि बीमारियों की जड़ है। वर्षों पूर्व जिस एक मकान में एक परिवार निवास करता था आज उसी मकान में कई परिवार एक साथ रहते हैं, कारण – जनसंख्या वृद्धि।

5. **आवागमन की समस्याएं** : आपने बसों और रेलगाड़ियों में भीड़ तो देखी ही होगी यहां तक कि कई बार लोगों को उनकी छतों पर बैठकर यात्रा करते भी देखा होगा। ये दृश्य जनसंख्या विस्फोट की ही देन हैं। हालाँकि हमारे देश में प्रतिवर्ष आगमन के साधनों में वृद्धि की जाती है, फिर भी लगातार जनसंख्या वृद्धि के कारण स्थिति लगभग ज्यों की त्यों ही बनी रहती है।

6. **अपर्याप्त वस्त्र** : देश में वस्त्रों का निर्माण न केवल देशवासियों की आवश्यकता पूर्ति हेतु बल्कि वस्त्रों तथा पोशाकों का निर्यात कर विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिये भी किया जाता है। वस्त्रों के निर्माण में प्रतिवर्ष वृद्धि देखी गई है फिर भी गरीबी की रेखा के नीचे बसर कर रहे परिवारों को पर्याप्त वस्त्र नहीं उपलब्ध होते हैं। और कई बार बच्चों व वृद्धों की शीत ऋतु में इस कारण से मृत्यु भी हो जाती है।

7. **सीमित चिकित्सा एवं शिक्षा सुविधाएँ** : आपने पढ़ा कि अधिक जनसंख्या गन्दगी को और गन्दगी बीमारियों को आमन्त्रित करती है इससे चिकित्सा सुविधाओं की आवश्यकताएँ बढ़ जाती हैं। हालाँकि केन्द्र व राज्य सरकारें पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत चिकित्सा मद पर बजट का बड़ा हिस्सा खर्च करती हैं फिर भी आपने सरकारी अस्पतालों में मरीज़ों को लम्बी कतार में खड़े हुए देखा होगा और अस्पताल में भरती मरीज़ों को पलंग की जगह जमीन पर लेटे हुए भी देखा होगा। यह भी जनसंख्या विस्फोट का ही नतीजा है।

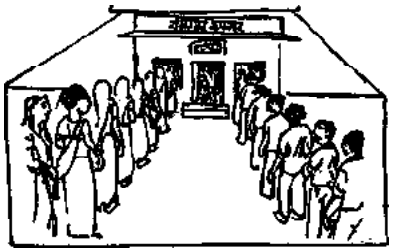

वर्ष दर वर्ष विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की संख्या में बढ़ोतरी होने के बावजूद इनमें दाखिलों की समस्या का अनुभव आपने भी किया होगा।

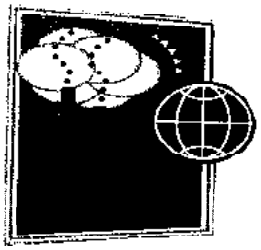

कहने का तात्पर्य यह है कि हम साधनों में कितनी ही वृद्धि क्यों न कर

लें, जब तक जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं होगा उपरोक्त सभी समस्याओं का समाधान नहीं हो पायेगा। जनसंख्या विस्फोट के फलस्वरूप **गरीबी, पर्यावरण प्रदूषण, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, शोषण, अपराध** जैसी कई समस्याएँ भी हमारे सामने मुंह फाड़े खड़ी हैं। सरकार द्वारा चलाई जाने वाली विभिन्न योजनाओं जैसे परिवार नियोजन, रोजगार योजनाएँ, कार्य के बदले भोजन योजना, ग्रामीण विकास योजनाएँ, सुखी परिवार एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिये बच्चों व माताओं के लिये कार्यक्रम आदि के बावजूद भी समस्याओं में कोई विशेष कमी नहीं आई है। इसका मुख्य कारण यह है कि हम अपनी जनसंख्या वृद्धि पर सार्थक अंकुश नहीं लगा पाये हैं।

II जनसंख्या शिक्षा :

हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के कई कारण हैं, जैसे कम उम्र में शादी होना, अशिक्षा, गरीबी, निम्न जीवन स्तर, परिवार नियोजन की जानकारी का अभाव, पुत्र की चाहत, जितने हाथ उतना काम की विचारधारा, धार्मिक अन्धविश्वास आदि। भारत की तेज रफ्तार से बढ़ती हुई आबादी हमारे चहुँमुखी विकास के लिए बाधक सिद्ध हो रही है। इस बढ़ती आबादी की दर को घटाने के लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक नागरिक में जनचेतना की भावना को जागरूक कर परिवार को सीमित एवं स्वस्थ रखने के तरीकों की तरफ प्रेरित किया जाये।

जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रण में लाने का सबसे कामयाब तरीका है कि हम अपने परिवार को सीमित रखें। इसके लिये सरकार ने तीसरी पंचवर्षीय योजना के तहत परिवार नियोजन कार्यक्रम जिसे अब **परिवार कल्याण कार्यक्रम** कहते हैं, चला रखा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अनुरूप जन्मदर को घटाकर जनसंख्या को स्थिर रखना है। भारत ही पहला देश है जिसने परिवार नियोजन को योजनाबद्ध तरीके से संजोकर क्रियान्वित किया है। **परिवार नियोजन** से अभिप्राय है दम्पतियों के द्वारा स्वयं की इच्छानुसार सुनियोजित तरीके से एक या दो बच्चों को जन्म देकर अपने परिवार को सीमित रखना, जिससे परिवार की शारीरिक, सामाजिक, मानसिक व आर्थिक आवश्यकताएँ पूर्ण हो सकें तथा परिवार सुखी, सन्तुष्ट व प्रसन्न रह सके। इसी कड़ी में प्रतिवर्ष 11 जुलाई को जनसंख्या दिवस मनाया जाता है।

लड़के की चाहत तथा बालिका की उपेक्षा :

सरकार द्वारा परिवार कल्याण कार्यक्रम वृहद् स्तर पर चलाये जाने के बावजूद भी जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण नहीं हो पाया है। इसका एक प्रमुख कारण है हमारे पुरूष प्रधान समाज में वंश वृद्धि के लिये लड़के की चाहत। पुत्र को वंश घटक माना जाता है यानि कि यह धारणा है कि पुत्र के बिना वंश समाप्त हो जाऐगा। यही वजह है कि पुत्र की चाहत हर समुदाय व आर्थिक स्तर के परिवारों में अत्यधिक होती है। दूसरा कारण हमारे समाज में लड़कियों के विवाह में दहेज प्रथा का प्रचलन है। इस वजह से माता–पिता लड़कियों को जीवन पर्यन्त भार समझ उनकी उपेक्षा करते हैं। इन्हीं चाहतो से एक ओर तो परिवार का आकार बढ़ता जाता है, तो दूसरी ओर इस पुत्र चाहत से कन्या भ्रूण हत्या को प्रोत्साहन मिला है। फलस्वरूप समाज में लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा गिरता जा रहा है, (तालिका 13.3) यह भविष्य के लिये एक खतरे का विषय है। पुरूष–स्त्री के घटते अनुपातको सुधारने के लिये कई समाज सेवी संस्थाए एवं सरकार कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिये प्रयासरत है। कानून

में कन्या भ्रूण हत्या में लिप्त डाक्टरों एवं सहयोगियों के लिये दण्ड का प्रावधान है। मनुष्य जाति की रक्षा हेतु यह आवश्यक है कि बालक की तरह बालिका को भी समाज में जीने का अधिकार मिले तथा जन्म के पश्चात् उसे बालक के समान भोजन, शिक्षा, वस्त्र, स्वास्थ्य आदि की पर्याप्त सुविधाएँ मिलें।

तालिका 13.3 भारत में पुरूष–स्त्री अनुपात

जनगणना वर्ष	स्त्री अनुपात प्रति एक हजार पुरूषों पर
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927
2001	933

आज स्थिति बदल रही है। शिक्षा तथा रोजगार के द्वारा बालिकाएं समाज में सम्मानित स्थान पा रही हैं। किन्तु फिर भी अभी स्थिति को और सुधारने की जरूरत है जिसकी जिम्मेदारी युवा तथा किशोर वर्ग की है। जनसंख्या शिक्षा द्वारा बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं को अवगत कराते हुए परिवार को नियोजित व सीमित रखने के लिये परिवार कल्याण कार्यक्रम के बारे में किशोरों एवं किशोरियों को जानकारी दी जाये।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. जनसंख्या वृद्धि हमारे देश की सबसे गंभीर समस्या है। विश्व की जनसंख्या के आधार पर चीन के बाद भारत दूसरे स्थान पर है।
2. भारत में जनसंख्या वृद्धि दर में उत्तरोत्तर वृद्धि देखी जा सकती है। वृद्धि दर 1901 की तुलना में 1911 में केवल 5.75 प्रतिशत थी जो बढ़कर 2001 में 330.8 प्रतिशत हो गई है।
3. जनसंख्या विस्फोट ने हमारे सामने कई समस्याएं जैसे भुखमरी, स्वच्छ पीने योग्य पानी की कमी, आवास की कमी, स्वच्छता का अभाव, आवगमन की समस्याएँ, सीमित चिकित्सा एवं शिक्षा सुविधाएँ, पर्यावरण प्रदूषण, बेरोज़गारी, शोषण आदि उत्पन्न कर दी हैं।
4. भारत की तेज रफ्तार से बढ़ती हुई आबादी हमारे चहुँमुखी विकास के लिए बाधक सिद्ध हो रही है। इस बढ़ती जनसंख्या को नियंत्रण में लाने के लिये सरकार ने ''परिवार कल्याण कार्यक्रम'' चला रखा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के अनुरूप जन्मदर को घटाकर जनसंख्या को स्थिर रखना है।

5. आधुनिक युग में जहाँ लड़कियाँ हर क्षेत्र में लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं, वहीं पुत्र प्राप्ति की इच्छा जनसंख्या वृद्धि का एक बड़ा कारण है।
6. जनसंख्या शिक्षा द्वारा बढ़ती जनसंख्या दर को घटाने हेतु परिवार कल्याण कार्यक्रम के द्वारा लोगों को जनसंख्या शिक्षा दी जा रही है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है:

(अ) भारत (ब) चीन

(स) पाकिस्तान (द) जापान

(ii) 1901 की तुलना में 2001 में भारत की जनसंख्या में वृद्धि हो गई :

(अ) 186.64 प्रतिशत (ब) 330.8 प्रतिशत

(स) 84.27 प्रतिशत (द) 51.47 प्रतिशत

(iii) जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रण में लाने का सबसे कामयाब तरीका है :

(अ) कल्याण कार्यक्रम (ब) रोजगार योजना

(स) परिवार नियोजन (द) ग्रामीण विकास योजनाएँ

(iv) जनसंख्या वृद्धि का एक बड़ा कारण है :

(अ) औद्योगिकीकरण (ब) पुत्र की चाह

(स) शहरीकरण (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

(v) विश्व की करीब ..... प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है:

(अ) 16 (ब) 17 (स) 18 (द) 15

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि योग्य भूमि निरन्तर ..... भूमि में बदलती जा रही है।

(ii) ..... के फलस्वरूप गरीबी, बेरोजगारी, पर्यावरण प्रदूषण, शोषण, अपराध जैसी कई समस्याएँ हमारे सामने मुँह फाड़े खड़ी हैं।

(iii) ..... द्वारा दम्पति स्वयं की इच्छानुसार सुनियोजित तरीके से एक या दो बच्चों को जन्म देकर अपने परिवार को छोटा एवं सीमित रख सकते हैं।

(iv) ..... तथा ..... द्वारा बालिकाएँ आज समाज में सम्मानित स्थान पा रही हैं।

3. बढ़ती आबादी का भोजन, आवासीय भूमि, पीने के पानी एवं स्वच्छता पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
4. परिवार नियोजन कार्यक्रम क्या है और कब शुरू हुआ था?
5. एक किशोर/किशोरी बढ़ती जनसंख्या दर को घटाने में क्या योगदान दे सकते हैं?
6. जनसंख्या वृद्धि एवं उससे उत्पन्न समस्याओं पर, कक्षा में अध्यापक की सहायता से चर्चा करें।

उत्तरमाला :

1. (i) ब (ii) ब (iii) स (iv) ब (v) अ
2. (i) आवासीय (ii) जनसंख्या विस्फोट (iii) परिवार नियोजन (iv) शिक्षा, रोज़गार